



श्रीमती ममता आर. देव

जन्म : 06 नवम्बर 1964

वसति : बी राजीव गी. देव

शिक्षा : एम.एच.एल.सी.

भाषा : हिन्दी, अंग्रेजी, प्रसंगिकगढ़ी

अनुभव : 35 वर्ष

रुचि : सामाजिक कार्य, अध्ययन, अध्यापन

विशेष सदस्य :

1. केंद्रीय अध्ययन मंडल, गृहविज्ञान, छत्तीसगढ़,
2. गृहविज्ञान अध्ययन मंडल, श्रीमंत यादव विश्वविद्यालय दुर्ग
3. गृहविज्ञान अध्ययन मंडल शासकीय दिग्गज स्वामता पी.जी. कॉलेज, राजनांदगाव (छ.ग.)

संपत्ति :

विद्यालयगत गृहविज्ञान विभाग, शासकीय कमलदेवी राठी महिला पी.जी. महाविद्यालय राजनांदगाव (छ.ग.)

ईमेल : mamtad064@gmail.com



वृद्ध विमर्श

परंपरा और आधुनिकता



संपादक
डॉ. भावना कमाने
ममता आर. देव

सं

संकल्प प्रकाशन

1569/14, नई बस्ती बजारीपारा
कलकत्ता पब्लिशिंग, कलकत्ता-700021
Mob. : 910677-9941; 9835-8965
Email : sankalpa@punjabkanya@gmail.com
Website : www.sankalppublication.com

available on amazon.in

₹ 395/-



वृद्ध विमर्श : परंपरा और आधुनिकता

डॉ. भावना कमाने
ममता आर. देव

सं

वृद्ध विमर्श

परंपरा और आधुनिकता



संपादक
डॉ. भावना कमाने
ममता आर. देव



डॉ. भावना कमाने

जन्म : 8 नून 1962 ई.

माता : स्म. श्रीमती सोनम कमाने

पिता : स्म. श्री जे.एस. कमाने

शिक्षा : एम.ए., एम.फिल., पीएच.डी.

भाषा : हिन्दी, मराठी, छोडसगढ़ी, बंगाली

अनुभव : 30 वर्ष, यू.जी. और पी.जी.

प्रकाशित पुस्तकें : बालजन्म ; समता एवं सम्बन्धन, महिला साक्षिकरण का वास्तव परिदृश्य, जनजातीय विकास को अवधारण, भारत में पारिवारिक इतिहास, वृद्ध विमर्श : परम्परा और आधुनिकता।

राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में 30 लेख-अलोच प्रकाशित।

रुचि : सामाजिक कार्य, अध्ययन, अध्यापन

विशेष : लोकसेवा आयोग से अध्यापन क्षेत्र में नियुक्ति

सम्पत्ति : महात्मा गांधी, सम्बन्धन - विभाग बाबू, पडरौरा कृदात शैक्षणिक महाविद्यालय सिलीटी, जिला- बमाली (छ.ग.)

संपर्क : पी-66, नगर बजारीपारा, बिलाचर (छत्तीसगढ़)

ई-मेल : sbj3745@gmail.com

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक या इसके किसी भी अंश का किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता, इसे संक्षिप्त, परिवर्धित कर प्रकाशित करना कानूनी अपराध है।

ISBN : 978-93-91435-44-8

प्रथम संस्करण, 2022

- पुस्तक** : वृद्ध विमर्श परम्परा और आधुनिकता
- संपादक** : डॉ. भावना कमाने, श्रीमती ममता आर. देव
- प्रकाशक** : **संकल्प प्रकाशन**
1569/14 नई बस्ती बक्तौरीपुरवा, बृहस्पति मन्दिर, नौबस्ता,
कानपुर (उ.प्र.)-208 021
दूरभाष : 094555-89663, 070077-49872
Email : sankalpprakashankanpur@gmail.com
website : www.sankalpprakashan.com
- कॉपीराइट ©** : प्रकाशक
- मूल्य** : 395/-
- शब्द-सज्जा** : रुद्र ग्राफिक्स, हनुमन्त विहार, नौबस्ता, कानपुर-21
- आवरण** : गौरव शुक्ल, कानपुर-21
- मुद्रक** : सार्थक प्रिंटर्स, नौबस्ता, कानपुर-21

13. संयुक्त एवं एकाकी परिवार में वृद्धजन
डॉ. शशि गुप्ता
14. भारतीय समाज में वृद्धजनों की समस्याएँ : समाधान
प्रोफेसर ललिता एन. राठोड
15. वृद्ध जीवन का संताप : साजिश
डॉ. अनु पाण्डेय
16. वृद्धावस्था जीवन का अहम पड़ाव
रूणा रश्मि "दीप्त"
17. वृद्ध विमर्श : कल और आज
डॉ. फतेह सिंह

भारतीय समाज में वृद्धजनों की समस्याएँ : समाधान

-प्रोफेसर ललिता एन. राठोड

मानव के जीवन में कुल चार अवस्थाएँ होती हैं। प्रथम शिशु अवस्था, द्वितीय किशोर अवस्था, तृतीय यौवन अवस्था तथा चतुर्थ प्रौढ़ अथवा वृद्ध अवस्था। मानव की ये उपरोक्त समस्त अवस्थाएँ प्रकृति प्रदत्त अर्थात् प्राकृतिक हैं। वृद्धावस्था मानव जीवन का अन्तिम चरण है। वैसे यदि देखा जाये तो वृद्धावस्था चाहे इस कड़ी में पुरुष हो या महिला दोनों की अनजान घटना नहीं है, परन्तु वर्तमान समय में वृद्धावस्था में जो समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। उनके मूल में उत्तर आधुनिकता, औद्योगीकरण, पश्चिमीकरण, भारतीय संस्कृति की अवहेलना, आधुनिक नित्य नये-नये वैज्ञानिक आविष्कार तथा दिन-प्रतिदिन समाज के बिगड़ते रूप आदि कारणों का विशेष रूपेण प्रभाव है।

विश्व स्तर पर वैज्ञानिक मानव का जीवन स्तर सुधारने तथा उसकी आयु की वृद्धि के लिए निरन्तर प्रयत्नशील हैं। इस संदर्भ में एक व्याख्या इस प्रकार की गयी है- "अमेरिका में बाल्टीमोर नामक स्थान में स्थित 'नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एजिंग' के 'जीरोन्टालॉजी' में वृद्धावस्था को टालने के बारे में चल रहे एक अनुसंधान से यह पता चला है कि अल्प आहार लेने से जीवन की आयु में वृद्धि हो सकती है।" इसी संदर्भ में इस संस्थान में चूहों तथा बिल्लियों पर इसी वृद्धावस्था विषय पर अनुसंधान किया गया है। शोधों के माध्यम से यह ज्ञात हुआ कि यदि भोजन में आवश्यक पोषक तत्वों की मात्रा कम किये बिना यदि उनकी मात्रा 30 से 70 प्रतिशत तक घटा दी जाये तो उनकी आयु में वृद्धि हो सकती है। इसी संस्थान में इसी प्रकार का एक और अनुसंधान किया गया जिसके माध्यम से यह ज्ञात हुआ है कि यदि भोजन में फल एवं सब्जियों की माला बढ़ा दी जाये तो दिल का दौरा पड़ने की संभावना 54 प्रतिशत तक कम हो जाती है।

अमेरिकी वैज्ञानिकों ने यह भी दावा किया है कि यदि मानव को जन्मजात बीमारियों, प्रदूषण के दुष्प्रभावों तथा संक्रामक रोगों से बचा के रखा जाये इसके अतिरिक्त भोजन व्यवस्था एवं अवासीय व्यवस्था में सुधार किया जाये तो मानव की आयु 400 वर्ष तक बढ़ायी जा सकती है। परन्तु ये उपरोक्त कहाँ तक प्रमाणित सिद्ध हो सकते हैं यह